भक्त हृदय के उद्‌गार..

बिन तेरे मिले हे राम मेरे,
अब चैना कहाँ मैं पाऊँगी।

मैं तो इतना जानूँ पिया,
हर पल ही तुझे बुलाऊँगी।।

हर घड़ी हर श्वास मेरा,
तेरे नाम में खो जाये।

अंग अंग यह रोम रोम,
तेरा ही अब हो जाये।।

यह तो तेरा ही है प्रभु,
अहमत्व इसमें सो जाये।

पर तुमको देखे बिना प्रभु,
समत्व अब न हो पाये।।

करुणानिधे करुणा करके,
मेरी रेखा आज बदल तू दे।

प्रारब्ध जाने क्या करे,
प्रेम लग्न में बदल तू दे।।

अग्न लगा दे प्रेम की,
कर जोड़े बस यह कहूँ।

अन्य कछु न सोच सकूँ,
हर पल तव भाव में ही रहूँ।।

संकल्प तो मैं तेरा हूँ,
यह तो मैंने जान लिया।

फिर भी मन संशय भरा,
जो कहो क्यों न मान लिया।।

- परम पूज्य माँ

प्रार्थना शास्त्र 1/३३२

११.२.१९६०

अनुक्रमणिका

१. *भक्त हृदय के उद्‌गार..*

३. *और हम हैं..*
बार-बार खुले किवाड़ों को
बंद कर लेते हैं!
श्रीमती पम्मी महता

७. *तन को ही यंत्र कहें,*
मिथ्या 'मैं' तूने भरा..
परम पूज्य माँ से 'पिताजी' के प्रश्नोत्तर

१३. *आज के दिन वह धरती पर आये,*
केवल हमारे लिये!
(जन्माष्टी के पावन अवसर पर विशेष)
संकलन - छोटे माँ

१८. *राम नाम के फल लगे,*
प्रेम वृक्ष मेरा झुक ही गया!
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता ,
द्वितीय अध्ययन, १३/९-११

२५. *भगवान योगक्षेम किसका करते हैं*
डॉ. जे के महता

२८. *सूर्य प्राण और चान्द रयि,*
मिली विस्तार रे करते हैं..
'मुण्डकोपनिषद्', द्वितीय मुण्डक १/५

३३. *अनुपम साधना स्थली - अर्पणा*
प्रस्तुति - श्रीमती शान्ता

३७. *अर्पणा समाचार पत्र*

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुवन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुवन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा अगस्त २०२१ को प्रकाशित तथा
सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

और हम हैं..
बार-बार खुले किवाड़ों को बंद कर लेते हैं!

श्रीमती पम्मी महता

जब जब आप श्री हरि माँ को देखती हूँ, आपको अपने चहुँ और महसूस करती हूँ! दिल की वादियों में एक ही आवाज़ गूँजती है.. वह है, आप श्री हरि माँ प्रभु जी की!

सच ही है माँ, ज़िन्दगी की रवायनगी में बहते बहते कभी रास्ता ही बदल जाता है और यह बदलाव मामूली नहीं होता! आप साथ हों तो उस बदलाव में भी अनूठे माधुर्य का एहसास हुआ रहता है.. तनहाइयों में भी गूँज उठती है शहनाई! अपने रब का प्यार मिल जाता है जब, तब कुछ और नहीं!

इस अनमोल सौग़ात आपकी को, जब आंतर में धरोहर के रूप में देखती हूँ तो नतःश्री बारम्बार होते हुये अपने को आपसे धन्य धन्य हुई ही पाती हूँ।

कभी यह भी ख़याल उभर आता है ज़हन पर कि जब आप माँ स्वयं प्रकट हो गये हैं मेरे लिये.. व आपने स्वयं मेरा हाथ थाम लिया है.. तो कौन होती हूँ मैं अपने पथ का निर्णय करने वाली.?!!

दो ही तो रास्ते हैं.. एक वह जो आपकी तरफ जाता है और आप स्वयं वहाँ अपनी आग़ोश फैलाये खड़े हैं। दूसरी ओर संग और मोह है, तन है व तनोसंग के कारण उत्पन्न हुये अनगिनत भावों के झमेले लगे हुये हैं.. जो आंतर में विस्तार पाते हुये उलझनों का जाल बुनते रहते हैं.. आपके लिए केवल समस्यायें ही खड़ी किये रहते हैं। यहाँ 'मैं' की मलिनता ही मलिनता है; निराशा है, कुछ आशा है.. इसी आशा व निराशा के हिंडोले में हिचकोले खाता है यह मन!

इसी 'मैं' मेरी को विराम देने के लिए, स्वच्छ व सुन्दर जीवन प्रदान करने के लिए, अपनी ही दैवी सम्पदा मेरे आंतर मन को प्रदान करने के लिए आप स्वयं खड़े हैं.. जहाँ आंतर में न दुःख है, न ही क्लेश हैं.. कहीं कोई भीरुपन नहीं! मानो कह रहे हैं, 'निर्भय हो कर अपने ही जी के जंजाल से, आ, मेरे में सिमट आ!'

कितनी कशिश भरी अनमोल ज़िन्दगी हमें प्रेरित कर रही है और किस क़दर मक़बूलता है इस प्रेरणा में!

संशय की गुंजाइश ही कहाँ रहने देते हैं आप! ऐसी निर्णायक स्थिति में खड़ा करके आप ख़ामोश खड़े हैं देखने के लिए कि यह कौन सी राह चुनती है.. फ़ैसला आप सदा ही मुझ पर छोड़ देते हैं..

दोराहे पर जो भी खड़ा हो कर सोचता है, 'मैं इधर जाऊँ या उधर जाऊँ..' यह इतना क्षणिक होता है, क्योंकि आप विभूति पाद श्री हरि माँ प्रभु जी का आकर्षण ही इतना है कि वहाँ सोचने का प्रश्न ही ख़त्म हो जाता है और आपकी ज्योत्सना, आपका आकर्षक व्यक्तित्व इस क़दर खेंच लेता है कि अँधेरों में भटकने की इच्छा ही विराम पा जाती है और मन आपके क़दमों में झुक जाता है।

जीवन के वो पल याद आते हैं.. बड़े ही प्यारे वह निर्णायक पल थे! एक बार जो झुका सर आपके क़दमों में, आप ही के नज़रेकरम से, फिर कहाँ उठा!

आप माँ का कोटि कोटि धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने इसे अपने दामन के साथ सदा सदा के लिए बाँध लिया। जब प्यार का ऐसा बन्धन आप स्वयं बाँध लें तो जीवनयात्रा में केवल आप ही के क़दम नज़री आते हैं, जो चल रहे होते हैं.. और मूक दर्शक बना, हे माँ, यह मन आपको निहारता ही चला जाता है। धन्य हैं आप माँ प्रभु जी, आप सचमुच धन्य हैं! जितना आपको धन्यवाद दूँ कम है! हरि ॐ

मेरी सोच का तो अब कोई अर्थ ही नहीं रह गया। यही जी चाहता है स्वयं को उन्हीं के अधीन करके, उन्हीं के हुक्म में रहने के इस सुनहरे अवसर को तहेदिल से व अतीव श्रद्धा व प्रेम से उठाते हुये चलती ही चली जाऊँ।

आप माँ के चलते हुये क़दम ही तो मेरी रहगुज़र बना रहे हैं और उसी पर मुझे चलते ही चले जाना है.. मेरे जीवन के सभी विकल्पों को यूँ ही आपने अपने में विराम दे लिया!

जब आपकी अनन्त कृपाओं में आपको देखती हूँ तो आपकी असीम करुण-कृपा के दर्शन पाई नतमस्तक भी होती हूँ और आनन्दित भी होती हूँ.. जन्म-जन्म के बन्धन से छूटने के लिए ही तो आप मुझे यूँ नवाज़ कर लिए जा रहे हैं!

आप माँ ने यह भी पल पल आश्वासन दिया हुआ है कि 'मेरी ओर असीम श्रद्धा व भक्ति से लिया हुआ एक भी क़दम व्यर्थ नहीं जाता..' श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को इसी प्रकार का आश्वासन दिया -

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।। *२/४०*

अर्थात् - इस बुद्धि की ओर जो भी प्रयत्न किया जाये, उसका नाश नहीं होता और विपरीत फल भी नहीं होता, इस बुद्धि रूपा धर्म का थोड़ा भी साधन किया हो, तो महान भय से उद्धार हो जाता है।

बस यही दुआ रहती है कि मेरा हृदय-दामन, हे श्री हरि नाथ, इतना विशाल रखना कि आपकी हर देन उसमें समा जाये! आमीन!

पीछे मुड़ कर क्या देखूँ? आगे जब प्रभुमय जीवन जीने की ज्योत्सना ही ज्योत्सना नज़री आती है, तो आ, दृढ़ निश्चय व स्थिर क़दमों से तथा श्रद्धा, भक्ति व प्रेम से अपने

सगुण वेष धारी श्री हरि माँ के पाछे-पाछे चलती जा। राह के सभी विघ्न आप स्वयं ही उठा लेते हैं.. ऐसा आश्वासन पाने के बाद मन डोलता ही कहाँ है?!!

हे मन तू जानती है न, डगमगाते हुये क़दम आप प्रभु माँ सों बल पाकर स्वयं ही स्थिर हो जाते हैं..

आ, अब एकतरफ़ा रास्ते पर स्वयं को अर्पित व समर्पित किये हुये ही चल! इन्हीं श्री हरि माँ के क़दमों में ही तेरा सर्वस्व बसा हुआ है।

माँ की वाणी जो भी कहती है उसे जीवन में स्वीकार करते हुये ही अतीव विनीत भाव से चल। 'माटी को कोई कीमत न दे। माटी में माटी हो कर जीने में ही अपना आदि अंत मान..' माँ प्रभु जी का यह आदेश तुझे मिला हुआ है, इसे तहेदिल से स्वीकार करते हुये अपने माँ प्रभु में पूर्ण आस्था लिये हुये चल और चलती ही चली चल.. जब तलक स्वयं माँ अपने में तुझे विराम न दे लें।

उनकी वाणी को ही शिरोधार्य करके चल.. क्योंकि इस सत्य के बाद कोई भाव-विचार उठना असत्य है।

आ, अब अन्धों की तरह नहीं.. उनसे पाई परम सत्यता को ही धारण कर.. जो उसी रहगुज़र पर तेरे क़दम बढ़ें जिसे चल कर माँ ने तेरे लिए स्वयं ही राह बनाई है।

युगों से यूँ तो चली आ रही यह राह पुरातन हो कर भी सनातन है सदा! इसी लिये तो आप अवतरित हो कर सगुण वेष में हमारे लिये बार-बार जन्म लेकर आते हैं।

आ, उन्हीं से पाई जीवन सम्पदा को धारण कर, तभी तो तेरा कल्याण पथ माँ प्रभु जी कभी भी स्वयं खोलने के बाद इसे बंद नहीं करते! हम ही हैं, जो बार-बार खुले किवाड़ों को बंद कर लेते हैं.. और आप माँ लौट जाते हैं!

आ, कर्मों में इस दिव्य ज्ञान को ही धारण कर.. जो भेद ही न रहे इनमें। सहज जीवनधारा में आप माँ से पाये ज्ञान को ही हे माँ, कृपा करी प्रवाहित होने दीजिये!

हे मन, अब तू चहुँ ओर से सिमट कर अपने ही रब में ध्यान लगा! उन्हीं से याचना-प्रार्थना कर, जो तेरे मार्ग को स्वयं ही प्रशस्त करते जायेंगे। आ, हरि गुण गा! श्रद्धा और प्यार से उन्हीं से उन्हीं का सिमरण कर!

हर की हो कर हरि में रह
हरि में हर को देख करी
सभी की तू हो जा
हरि ॐ

❖ ❖ ❖

तन को ही यंत्र कहें, मिथ्या 'मैं' तूने भरा..

यंत्र आरूढ़ जीव

पिता जी

गीता में कहा है :

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया।।

श्रीमद्भगवद्गीता - १८/६१

ईश्वर (शरीर रूप) यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को, अपनी माया से घुमाता हुआ, सब भूतों के हृदय देश में स्थित है।

भगवान जीव को यंत्र पर चढ़ा कर अपनी माया शक्ति से घुमा रहे हैं। यह यंत्र और माया क्या है? इसे माया क्यों कहते हैं?

सारांश

सम्पूर्ण भूत प्रकृति की त्रिगुणात्मिका शक्ति द्वारा गुणपूर्ण स्वभाव सहित ही उत्पन्न होते हैं। निहित तथा सहज गुण जीव को कार्यसिद्धि की ओर स्वतः प्रेरित करते हैं। यह तन मानो एक ढांचा है, यंत्र है, जो किसी निश्चित काज के लिये घड़ा गया है, जीव के वश में कुछ भी नहीं। कर्मचक्र सार समझना कठिन है, इस कारण, जीव अज्ञान और मोहवश हुआ, कर्तृत्व भाव तथा भोक्तृत्व भाव के भ्रम में रहता है। त्रिगुणात्मिका शक्ति

दुर्विज्ञेय होने के कारण भ्रमजनक है और जीव सत असत् कुछ भी समझ नहीं पाता, इसलिये इसे माया कहते हैं।

प्रश्न अर्पण

गीता में कहा श्याम ने, यंत्र आरूढ़ हुए अखिल भूत।
ईश्वर उन्हें घुमा रहा, माया से बांधी अखिल भूत।।१।।

यह यंत्र है क्या माया है क्या, माया इसको क्यों कहें।
राम मेरे तुम स्पष्ट कहो, सारांश इसका समझ सकें।।२।।

तत्व ज्ञान

माया समझ है प्रथम क्या, अवास्तविक वास्तविक दर्शाये।
असत् में सत का भान हो, कल्पित सत ही दर्शाये।।३।।

मिथ्यात्व में सत भ्रांति ही, भ्रम उत्पादक शक्ति है।
अज्ञान अविद्या मोहितकर, मनोजाल अनुरक्ति है।।४।।

छाया में यह देखे रूप, स्वरूप से यह रहे परे।
शब्दन् में जो निहित रूप, उसको यह नहीं समझने दे।।५।।

त्रिगुणात्मिका शक्ति जो, पूर्ण जग को जो रचे।
पूर्ण रूप से पूर्ण में, निहित रूप में छिपी रहे।।६।।

उसको जो न जान सके, माया वह बन जाती है।
भ्रम में जो नित्य रहे, मोहित यह कर जाती है।।७।।

यंत्र जान यह तन ही है, कार्य विशेष को यह जन्मा।
बंधा हुआ यह गुणन् से, काज करन् को यह जन्मा।।८।।

यंत्र ढांचे को कह लो, जिसमें किसी को ढाल सको।
वह गुण बह ही जायेगा, ढलान निहित जहाँ पे हो।।९।।

विवश कर्म सब होते हैं, रोक नहीं इन्हें पाओगे।
मोह कारण रुकना चाहो, गुण बंधे बढ़ जाओगे।।१०।।

माया बंधा इसको कहें, हो भ्रमपूर्ण पर दीखे न।
मोह मूर्छित बुद्धि जिसकी, वास्तविकता जो देखे न।।११।।

मिथ्यात्व में बैठा 'मैं' कहे, कर्म को भ्रष्ट 'मैं' करे।
जो होना होता जायेगा, उद्विग्नता मन में वह भरे।।१२।।

त्रिगुणात्मिका शक्ति यह, जो समझ नहीं आती है।
समझ परे जब लौ रहे, नित्य ही वह भरमाती है।।१३।।

ज्ञान की ज्योति नहीं जले, अंधियारे में जीव रहे।
तनो आरूढ़ है 'मैं' उसकी, माया बधित ही घूमा करे।।१४।।

भ्रम को ही माया कहो, माया को तुम मोह कह लो।
माया को तुम मल कह लो, असत् वर्तन माया कह लो।।१५।।

आभास को तुम माया कहो, मूर्ख्रता को माया कहो।
जीव कोण से कहते हैं, धोखे को तुम माया कहो।।१६।।

ब्रह्म ने माया रची नहीं, ब्रह्म स्वभाव माया नहीं।
ब्रह्म ने सत में सत रचा, वहाँ रची छाया नहीं।।१७।।

त्रिगुणात्मिका प्रकृति है वा, वह सब कुछ रच देती है।
जड़ चेतन और जीव क्या, सबको जन्म वह देती है।।१८।।

सम्पूर्ण हैं गुण भरे, गुण राज़ यह जान ले।
गुणातीत वह हो जाये, शुद्ध प्रकृति वहाँ रहे।।१९।।

भ्रांति जिस पल मिट जाये, माया कहाँ पे टिक पाये।
जो होये होता ही रहे, विधान नहीं कभी रुक पाये।।२०।।

किम्कर्त्तव्यविमूढ़ वह, कभी नहीं हो पायेगा।
द्वंद्व संग उद्विग्नता से, वह तो दूर हो जायेगा।।२१।।

सूत्रधारी वह आप है, रचना पूर्ण हो चुकी।
तद्रूप होई के सब करो, या होयेगा दुःखी सुखी।।२२।।

यंत्र आरूढ़ जो उसे कहें, यंत्र भी उनने ही रचा।
तन को ही फिर यंत्र कहें, मिथ्या 'मैं' तूने भरा।।२३।।

कर्म स्वतः हों गुण बधित, कर्तृत्व भाव तू भरता है।
गुण काज करें और गुण भोगें, भोक्तृत्व भाव तू भरता है।।२४।।

कृष्ण तो मानो सत्य कहें, तब ही सत्य यह जान सको।
गर यह सत्यता न जानो, माया बधित ही तुम रहो।।२५।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

इक तन ही है यंत्र नहीं, पूर्ण ब्रह्माण्ड यंत्र कहो।
जीव का हो चाहे जंतु का, सब ब्रह्म का यन्त्र ही हो।।२६।।

वृक्ष का भी तन इक हो, पुष्प का भी इक तन कह लो।
वायु कहो बदली कहो, जल थल को भी यंत्र कह लो।।२७।।

पूर्ण जो भी जहाँ पे हो, वह तो उसी का यंत्र है।
अटल अचल जो दीखे है, पूर्ण ही वा यंत्र है।।२८।।

निर्माता वह निश्चित करे, किसको क्या क्या करना है।
संचालक वह बस आप है, जाने कहाँ क्या धरना है।।२९।।

क्योंकर क्या क्या कित होये, निर्माणित सत्त्व ने कर दिया।
अपने बस में कुछ नहीं, प्रमाणित भी तो कर दिया।।३०।।

जीव भले कुछ भी चाहे, वा कहा ही होता जाता है।
लाख चाहे कुछ रोक वह ले, जीव रोक नहीं पाता है।।३१।।

सो जो दीखे जो भी हो, वा का यंत्र इसे जान लो।
जो भी कर्ता सा दीखे, वहाँ एजना उसकी मान लो।।३२।।

हिल जुल तनिक न हो पाये, वा बिन कहे नहीं पात हिले।
वह सूत्रधारी ही जब चाहे, भूकम्पवत् भूमि भी हिले।।३३।।

समझ यह गर आ जाये, तन की ओर फिर देख लो।
क्या इक भी कर्म है आपुनो, आंतर आ के देख तो लो।।३४।।

जिसके कहे नयना देखें, वह द्रष्टा कोई और है।
जिसके कहे यह वाक् बहें, वह वचन शक्ति कोई और है।।३५।।

श्रवण शक्ति कोई और है, वक्ता कोई और है।
राम चाहे यह शक्ति दे, सब शक्ति की वही ठौर है।।३६।।

इसी विधि तनो एजना, जग एजित वह ही करता है।
अचल वह ही आप है, चंचल वह ही करता है।।३७।।

वह नटवर वह सत्य रूप, उस सत्त्व को गर जान लो।
दर्शन पाछे सत्त्व है जो, घूँघट उठे तो जान सको।।३८।।

'मैं' का घूँघट पहरा है, अहंकार अंधियारा भया।
समझे अहं सब मैंने किया, सूत्रधारी मानो छिपा।।३९।।

'मैं' समझे सब मैं करूँ, गुण गति वह जाने न।
'मैं' भरमायी माया बंधी, गुण बंधी पहचाने न।।४०।।

मन बुद्धि संग 'मैं' मिली कहें, यह सब कुछ मैं ही करूँ।
मंत्र न माने यंत्र न माने, समझे सब कुछ मैं ही हूँ।।४१।।

पूर्ण जग का निर्माता, नियंता कोई और है।
संरक्षण वा का और करे, वा भोगन हारा और है।।४२।।

इसको समझ के जान तू ले, निर्माण कर्ता कोई और है।
यंत्रवत् यह तन मानो, पर वा रचयिता और है।।४३।।

जीव के कोण से गर देखो, अपने तन को देख लो।
जीव भी तो इक यंत्र है, इसको अब तुम देख लो।।४४।।

यह रेखा रचना वा ने करी, यह रूप रंग सब वा ने दी।
तन नाते यह जग दिया, निहित गुण सब में भर दी।।४५।।

'मैं' कहे मन भूले से, यह कर्ता तो मैं ही हूँ।
भूले से सब अपनाये, कहे नियंता मैं ही हूँ।।४६।।

यह भूल ही केवल भूल है, इस भूल को अब भुलाइये।
पर तन यंत्र है वा का ही, इसको मान अब जाइये।।४७।।

अब समझ ओ मन मेरे, जो भी हो सब राम करे।
पुनः कहें तुझे जो भी हो, जो होये सब सत्य रचे।।४८।।

यह जग जो है दीख रहा, यह कर्म चक्र है चल रहा।
अपना भाव ही बीज भया, और उसी ने रूप धरा।।४९।।

फल रूप आधुनिक जीवन, 'मैं' की यहाँ कोई बात नहीं।
बीज स्वतः ही फूट पड़े, आज तो कुछ भी हाथ नहीं।।५०।।

रुचि अरुचि जो भी है, कभी पूर्ण हो कभी न भी हो।
वह समझे सब मैं ही करूँ, रुचिकर जिसकी रेखा हो।।५१।।

अजब तमाशा देख रहा, रुचिकर जिसको मिल जाये।
राम को वह ही न माने, वांछित फल जिसे मिल जाये।।५२।।

जिसे कहीं विपरीत मिले, उसको समझ आ जाता है।
सूत्रधारी कोई और है, मान सहज वह जाता है।।५३।।

कर्तृत्व भाव यह अहंकार, अनुकूलता में बढ़ जाता है।
विपरीत भये सब संस्कार, तो दम्भ दर्प बढ़ जाता है।।५४।।

यही माया है जान ले, जो सत्त्व नहीं पहचान सके।
भ्रम पूर्ण मन हो जाये, कर्ता निज को माना करे।।५५।।

राग द्वेष के कारण ही, रुचि अरुचि कारण कहो।
संग के कारण तुम कह लो, सत्त्व सार नहीं समझ सको।।५६।।

अखण्ड मौन ने न्याय किया, अखण्ड मौन बस मौन रहा।
भाव जब भूमि पे पड़ा, माया ने नव तन रचा।।५७।।

बीजप्रद वह पिता भया, अव्यक्त अकर्ता वह रहा।
भाव ने स्थूल ही चाहा, स्थूल ही वा ने रूप दिया।।५८।।

यह रचना जो हो चुकी, वह तो बीज अब फूट चुका।
निर्माणित आयु गुण लेकर, रूप प्रकट यह हो चुका।।५९।।

निर्माता कोई और है, सत्य छिपा माया रही।
वा पाछे कोई और है, पर 'मैं' नहीं उसे देख सकी।।६०।।

स्थूल में जा के जब देखे, माया पाछे गर दीख पड़े।
तब जाने कर में सूत्र ले, नटवर नाटक कर रहे।।६१।।

१३.१०.१९६६

आज के दिन वह धरती पर आये,
केवल हमारे लिये!

(जन्माष्टमी के पावन अवसर पर विशेष)

संकलन - छोटे माँ

अर्पणा पुष्पांजलि अंक अगस्त १९९२

प्रश्नः माँ! भगवान बार-बार साधु की पुकार पर जन्म लेकर आते हैं परन्तु हम उन्हें पहचानने से वंचित रह जाते हैं.. वह श्रद्धा कहाँ से लायें? आज जन्माष्टमी पर भगवान का जन्म-दिवस मनाने के लिए माँ, आप हमें वृन्दावन ले चलें!

परम पूज्य माँः मथुरा में कंस के कारावास में बन्दी वासुदेव और देवकी के घर में भगवान का जन्म हुआ। यदि उन जैसा विशाल हृदय और प्रेम हो, तो श्रद्धा के पलने में भगवान का जन्म होता है। यदि भगवान की जन्म बेला को याद करें तो कितने दुःख और कष्ट

झेलने के बाद; कितने वर्ष कारावास में रह कर, किन-किन कठिनाइयों में उनके घर भगवान का जन्म हुआ! अपने हर शिशु को उन्होंने अपनी आँखों के सामने जाते देखा, फिर भी उन्हें कृष्ण के आने का इन्तज़ार लगा रहा!

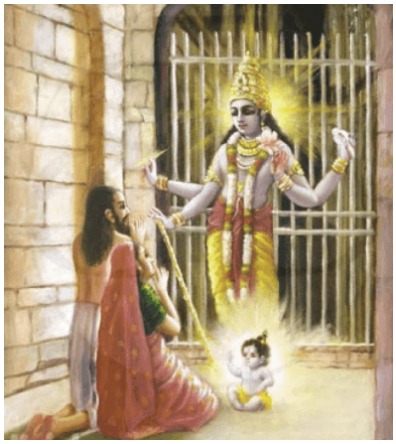

अपने हर शिशु को कंस के हाथों सौंप कर भी उन्होंने यही कहा होगा, 'हे श्याम! हमें तेरी प्रतीक्षा है।' जब साधु भाव के लोग कहते हैं कि हमें तुझसे लग्न है, तुझ से प्यार है, तेरा इन्तज़ार है, तो वह अवश्य आते हैं! आज के दिन वह धरती पर आये, केवल हमारे लिये! तन धर कर वह आये.. जो तनधारी नहीं; जो तन से नित्य परे हैं, वह भगवान धरती पर तन धर कर आये कि शायद हमें भी उनकी बात पसंद आ जाये।

जब अपनी ओर देखें तो सोच उठेगी, वह कैसे हमारे हृदय में जन्म लें? हमने तो हृदय में उन्हें कभी पुकारा ही नहीं.. न ही कभी बुलाया है, न ही कभी निहारा है। क्या हम कह सकते हैं कि हमें केवल आपकी लग्न है? आपकी चाहना है अन्य कोई भाव नहीं! क्या हम कह सकते हैं, 'हे राम! अब तो मन की चाहना है कि तुम ही आवो'! जब यही एकमात्र चाहना रह जाये तो अनन्य भाव होता है।

ऐसे भक्त को भगवान बुद्धि योग देते हैं। उस बुद्धि योग से वह भक्त भगवान को देख सकते हैं, पहचान सकते हैं और अपने हृदय में उतार सकते हैं। यह अनन्य चिन्तन कब होगा? जब हर भाव में उनका भाव होगा, हर बात में उन्हीं की बात होगी, हर समिधा उन्हीं के चरणों में धरेंगे। पर यह होगा कैसे?

आज वृन्दावन चलना है तो पहले उस कारावास में चलें जहाँ पर भगवान के पिता और उनकी माँ बन्दी हैं। वहाँ पर जन्म लेते हैं श्याम! वहाँ पर श्याम ने आना है, वही श्याम का मन्दिर है, श्याम का जन्म वहाँ हुआ! यदि मनो खिलवाड़ और मन की चाहना की पूर्ति चाहते हो तो वहाँ पर भगवान का जन्म मत माँगो।

पहले देखें भगवान का जन्म कहाँ हुआ? भगवान का जन्म कैद में हुआ, उनके जन्म पर कुछ न कुछ तूफ़ान तो उठेगा ही.. भगवान आ रहे हैं, उनको सहन करना हम मन वालों के लिये बहुत कठिन है। मन वाले तो हर प्रकार से उन्हें तोड़ने के प्रयत्न करते हैं। मन तो केवल अपनी चाहना पूर्ति ही चाहता है। मन में तो कोई ऐसा भाव नहीं होता जो उनके चरणों में चढ़ा सकें।

मन ने ही तो भगवान के जन्म के लिये जेल बनाई। याद रहे, भगवान का जन्म-मरण तो हो नहीं सकता। आत्मा का जन्म क्या? परमात्मा का जन्म क्या? वह तो मन की पुकार से धरती पर आते हैं। किसी के मन की दुष्टता उन्हें बन्दी बना लेती है और किसी की पुकार उन्हें धरती पर बुला लेती है! आज के दिन उनका जन्म हुआ, देखो तो सही, वहाँ पर कितने पहरे लगे हुए हैं! जितना दुष्ट मन होता है.. उतने ही बड़े पहरे होते हैं।

अहंकार तो अपने को भगवान मानता है, वह भगवान को सहन कैसे करेगा? कंस ने कहा, 'मैं तो उसको जीवित नहीं छोड़ूँगा। यह कैसे हो सकता है कि कोई ऐसा आ जाये जो मुझे मार सके?'

जब पाप इतने बढ़ जायें कि चहुँ ओर हाहाकार मच जाये और कोई समाधान न हो सके.. तो भगवान को आना ही पड़ता है। भगवान के जन्म की बात करें तो उनका जन्म तो किसी ऐसी जगह पर हो सकता है जहाँ पर उन पापियों की दृष्टि है जो उन्हें केवल मिटा देना चाहती है.. उससे बचाव की माँग हो तो ही जन्म होता है। अपने आन्तर की क्रूर वृत्ति देखें। कामना पर मर मिटने वाले दिल को देखें।

चाहना से ओत-प्रोत भाव देखें.. लोलुप्त निगाह देखें.. ऐसे दिल उन्हें कब बुलायेंगे? आज के दिन कैसे कह सकेंगे, 'हे श्याम! मेरे हृदय में आ जावो!' पहले इस वृत्ति को देख तो लें। यदि अपनी मौज के लिए, रौनक के लिए बुलाना है तो ठीक है, फिर तो जो जी चाहे सो करें, किन्तु यदि उनके लिए बुलाना है तो बात बहुत फ़र्क़ है।

देखना यह है कि मेरी बारी कब आयेगी.. जब मेरी चाहनाओं का नाश करके श्याम मुझे भी अपनी ओर ले जायेंगे। यह चाहना ही तो मुझ से हर बार ग़लती करवा देती है और मुझे इस नश्वर तन से बाँध देती है।

भगवान जी ने कहा है, 'यह मन ही जन्म लेता है, यह मन ही सब कुछ करता है। आत्मा तो सत, चित्त, आनन्द में स्थित है, वह जन्म नहीं लेता।' जो भी कर्म करता है, यह मन ही करता है। जो संसार दीखता है, इस मन की रचना है। मन की पुकार के परिणामस्वरूप ही सत्यता का जन्म होता है और मन की सत्यता को दबाने से ही पाप होता है। यह मन ही पाप और पुण्य में फंस जाता है।

देखना यह है कि क्या हम सच ही भगवान का जन्म चाहते हैं.. हम उन को बुलाते हैं, प्रार्थना करते हैं, उन्हीं को मिलने की बातें करते हैं, फिर भगवान जी को हम पर

तरस क्यों नहीं आ जाता! भगवान निर्दयी तो नहीं! झूठ तो नहीं कहते कि वह करुणापूर्ण हैं! ये सब बातें केवल कहानियाँ ही तो नहीं हैं कि भगवान को पुकारें और वह आते हैं। हम इस मन की कैद में फंसे हुए हैं.. और इसके द्वार पर चाहनाओं के ताले लगे हुए हैं।

अब सोचना यह है कि भगवान ऐसे मन में आयें तो कैसे आयें? यह आन्तर में ताले हमने लगाये हैं.. भगवान ने तो नहीं लगाये और न ही रेखा ने लगाये हैं। ये रेखा बंधे नहीं हैं, ये हमने लगाये हैं अपने आन्तर में, ताकि सौंदर्यपूर्ण दिदायमान होने वाली ज्योति कहीं बल न जाये! एक ओर हम भगवान का जन्म माँगते हैं.. और दूजी ओर हम मन के ताले पक्के करते जाते हैं। भगवान आयें तो कैसे आयें? यदि हम आज इतनी सी बात समझ जायें कि भगवान ने तो आने से कभी इनकार नहीं किया.. हम ही उन्हें अपने आन्तर में आने नहीं देना चाहते तो हमारा दृष्टिकोण ही बदल जायेगा।

आज हमारे लिए बहुत ख़ुशी का दिन है, और बहुत दुःख का दिन भी है। एक ओर ऐसी विडंबना है कि हम भगवान को चाहते ही नहीं। हमारा मन अंधकार से भरा हुआ है। इसमें मलिन और दुर्गन्धयुक्त भाव आते रहते हैं, दूसरी ओर भगवान की महिमा है। इन दोनों का मिलन हो, तो कैसे हो.. यह तो सोचें! हमें यह सोचना ही पड़ेगा कि क्या हम सच ही उस मालिक को चाहते हैं?

उन को देख कर मन मुसकुराता है और जब स्वयं अपने दर्शन करूँ तो चहुँ ओर अंधकार ही अंधकार है। वहाँ पर कोई भी ऐसा भाव नहीं, जिसका श्रृंगार कर मैं बाहर निकलूँ और कहूँ, 'हे श्याम! आज तो बस तेरा ही इंतज़ार है। आज तो मुझे बार-बार यही याद आती है कि आपका जन्म तो हुआ, परन्तु किन कठिनाइयों में हुआ, किसके घर हुआ और किसके हृदय में हुआ।'

जहाँ पर भगवान लीलायें करते रहे, देखो तो सही, वे लोग कैसे हैं? उनके भाव कैसे हैं? क्या आप उन बाल-ग्वालों के पास कभी बैठे? देखो तो सही, उन के चित्त कैसे हैं? वह तो अपने प्राण हथेली पर लेकर श्याम के अंग-संग रहते हैं और हर लीला उन के लिये ही करते हैं। दूसरी ओर हम तो घोर अंधकार में बैठे हैं।

सोचना यह है कि इस घोर अंधकार में बैठे हुए हम भगवान का नाम कैसे बुलायें? हमारी लग्न ही नहीं है, श्रद्धा का तो नाम नहीं। बस इतना ही है कि इस पल तो एकान्त में बैठे हैं। इस पल तो थोड़े से आँसू बह जाते.. इस पल तो थोड़ा अपनी ओर देख लें कि क्या हुआ, क्यों नहीं आये श्याम?

आज तो वरदान माँगने का दिन है.. झूम कर उन्हें बुलाने का दिन है.. आज तो पुरानी स्मृतियाँ याद करने का दिन है, इसमें कोई संशय नहीं। आज दुःख का दिन हो ही नहीं सकता, उनके लिए, जिन की अनन्य भक्ति है! ..और सुख का दिन हो ही नहीं

सकता उनके लिए, जिनकी चाहनायें हज़ारों हैं। जिन का मन कभी इधर गिरा, कभी उधर गिरा और मन ही प्रधान है.. उनके लिए आज सुख का दिन नहीं हो सकता।

आज का दिवस प्रभु के नाम से कैसे आरम्भ करें? पहले अपने आन्तर के ताले तो खोल दें.. आज के दिन तो खोल दें! आज के दिन तो बैठ कर सोचें, कि हमें क्या चाहिये? यह घूंघट उठे तो सही.. जो माया मोह का पर्दा पड़ा हुआ है.. यदि यह घूंघट आज के दिन भी न खुला तो एक वर्ष और बीत जायेगा और इस मन को अपने आप पर तरस नहीं आयेगा। आपने किसी अन्य को कोई क्षति नहीं पहुँचायी, आपने तो अपने को आप तोड़ कर, चूर-चूर करके, अंधकार में डाल दिया है।

इस समय तो यह देखना है कि माँग क्या है? अपनी माँग की बात करें। इस समय तो शायद भगवान हमें एक मौका दे रहे हैं कि अपनी माँग ठीक कर लो। हम कहते हैं 'हे भगवन्! खोलो द्वार!! हे प्रभु! कहाँ छिपे हो तुम?' परन्तु यदि भगवान हमें पूछ लें कि मेरे द्वार तो खुले हैं, मेरी ज़िन्दगी में तो कुछ भी छुपा हुआ नहीं है, परन्तु तुम्हारे हृदय द्वार ही नहीं खुल रहे, तो हम क्या जवाब देंगे?

ऐसा प्रतीत होता है कि उन का जन्म दिवस हमें एक ही बात कहता है कि 'अब तो द्वार खोल दो। अब तो प्रीत की बात करो, अब तो राग-द्वेष की बात छोड़ो, अब तो मुझे पुकार लो। मेरा जन्म दिवस आता है और आप भी कहते हैं, आपको वह लुभावना लगता है, तो फिर थोड़ा सा मुझे बुला लो, अब तो बुला लो!' ❖

राम नाम के फल लगे,

प्रेम वृक्ष मेरा झुक ही गया!

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु।।९।।

श्रीमद्भगवद्गीता-१३/९

(द्वितीय अध्ययन)

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. पुत्र, स्त्री, घर, धन आदि के प्रति अनासक्त हो और अधिकार रहित हो;

२. तथा इष्ट अनिष्ट की प्राप्ति में नित्य समचित्त रहो।

भावोद्गार

आँख मेरी विवश देखे, ढूँढन की चाहना नहीं रही।
कान सुनें गर राह पर सुनें, पर श्रवण की रसना नहीं रही।।१।।

विवश हूँ जग में विचर रही, रहने की तमन्ना नहीं रही।
जहाँ तूने बिठाया बैठी, बैठन् की तमन्ना नहीं रही।।२।।

बैठ के तेरे द्वार पे, ध्यान रे मैं करती रही।
पर सच जानो ओ राम मेरे, ध्यान तमन्ना नहीं रही।।३।।

कौन ध्याये तुझे राम मेरे, कौन बुलाये बहरे तुझे।
बुला बुला मैं हार गई, बुलाने की तमन्ना नहीं रही।।४।।

कुछ गिला करूँ तुझसे मैं राम, यह भी चाहना नहीं रही।
भूले से तुम तक आ जाती, पर कोई बहाना नहीं रही।।५।।

तुम ही कह दो राम मेरे, मेरी चाहना जीने की नहीं गई।
इक पल भी तेरे मिलने की, यह मेरी चाहना नहीं गई।।६।।

इक बेरी घर पिया आ जावो, मिलने की चाहना नहीं गई।
इक बेरी दरस दिखा जावो, तेरी दरस की चाहना नहीं गई।।७।।

कब से बुला रही तुझे, अब मिलने की चाहना नहीं गई।
पिया इक बेरी घर आ जावो, मेरी मिलन की चाहना नहीं गई।।८।।

कब लग तुम तरसावोगे, और यूँ ही मुझे तड़पावोगे।
इतना कह दो राम मेरे, क्या इस जन्म के बाद आवोगे।।९।।

मैं कर दर्शन जी लूँगी, तेरी विरह के आँसू पी लूँगी।
बस इक बेरी देख के राम, लब अपने मैं सी दूँगी।।१०।।

राम से बातें करो बैठ के, जग वालों से मिलना क्या।
राम से राम को माँग लो, जग वालों को मिलना क्या।।१।।

दुनिया से गुमान न करो, इक दिन गिरना ही होगा।
जिसकी प्रीत नहीं राम से, वही ऐंठ खड़ा होगा।।२।।

राम नाम के फल लगे, प्रेम वृक्ष मेरा झुक ही गया।
लग्न हुई मेरी राम से, उद्विग्न मन सखी री मिट ही गया।।३।।

अनिकेत गर हो नहीं, तो निकेत से लग्न रहेगी मेरी।
जब जान लिया मेरा कोई नहीं, तो कैसी लग्न पिया होगी मेरी।।१।।

गर यह जाना, जो है जग को, सार, इक राम का भाव ही है।
कहाँ प्रीत करे कहाँ द्वेष करे, कहाँ जाने राम अभाव ही है।।२।।

गर जान लिया मन राम बिना, इस जग में कोई नहीं।
कैसी प्रीत करे अरी जग से, गर दूजा जग में कोई नहीं।।३।।

एकत्व में जब स्थित हुआ, द्वैत स्वतः मिट जायेगा।
फिर जो देखे तू वह देखे, तू उसमें ही समायेगा।।४।।

राम स्वरूप इक ही जग में, आच्छादित हो रहा।
संग दोष तुझमें जो है, इस कारण आच्छादित हो रहा।।५।।

लग्न कैसी फिर अग्न कैसी, गर राम भाव में आ ही गया।
राम राम सब अंग भये, तो राम भाव में समा ही गया।।६।।

जब जान लिया सब वह ही है, मृत्यु किसको आयेगी।
कौन मरे और कौन जिये, मैं की मृत्यु ही हो जायेगी।।७।।

पूर्ण जग में राम ही है, 'मैं' को भी राम पे त्यागेगा।
राम राम बस रह जायेगा, राम भाव में जागेगा।।८।।

तन सम्बन्धी जग में, तेरा कोई नहीं।
गर तन तू नहीं तो देख ज़रा, बिन तेरे कोई नहीं।।९।।

इस भाव में गर तू रह न सके, नित अभ्यास तू करती जा।
तनोभाव मन से हटा के, राम भाव को भरती जा।।१०।।

विरक्त होकर विचर जहान में, उसके बिना तेरा कोई नहीं।
वह ही इक अरे है तेरा, उसके बिना अरे तेरा कोई नहीं।।११।।

अमानित्वम् ही लक्ष्य तेरा, वैराग्य है साधन पाने का।
संसार में जो भी पाये तू, बना ले साधन पाने का।।१२।।

प्रारब्धवश तुझे जो भी मिले, इस सब को अब तू सह लेना।
दुःख सुख जो भी सामने आये, राम है मन से कह लेना।।१३।।

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि।।१०।।

श्रीमद्भगवद्गीता-१३/१०
(द्वितीय अध्ययन)

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. मुझमें अनन्य योग,
२. अव्यभिचारिणी भक्ति,
३. एकान्त में रहने का अभ्यास,
४. (तथा) लोगों के समूह की अप्रतीति (होनी चाहिये)।

भावोद्गार

तूने कहा मैंने सुन लिया, अनन्य भक्ति बिन न मिले।
पर मैं तो समझी राम मेरे, बिन तेरे कहे पिया तू न मिले।।१।।

मैं क्या करूँ ओ राम मोरे, गर साधना कर ही न पाऊँ।
साधना तो पिया दूर रही, आराधना कर ही न पाऊँ।।२।।

कहते हो तुम राम मेरे, भक्ति हो अव्यभिचारिणी।
तब ही राम तेरे नाम की, बनूँगी मैं अधिकारनी।।३।।

त्राहि त्राहि मैं पुकार उठूँ, तो ही तो राम तुम आवोगे।
हर पल पंथ निहारा करूँ, तब ही आन बचा पाओगे।।४।।

अनन्य भक्ति पिया कित पाऊँ, किस विध याद करूँ तुझको।
अनन्य भक्ति पिया मुझको दे, बैठी फ़रियाद करूँ तुझको।।५।।

ओ राम मेरे कृपा करो, जग चाहना अब मिटा ही दो।
दूर करो इस दुनिया से, दुनिया का बहाना मिटा ही दो।।६।।

विवक्त देश सेवन करूँ, तुम आदेश यह देते हो।
प्रारब्धवश फिर जन पूर्ण, जग क्यों मुझको देते हो।।७।।

किस विध जग वालों में रहकर, मैं जग वालों से दूर रहूँ।
जग में रहकर राम मेरे, तुझे मिलने से मजबूर रहूँ।।८।।

राम मेरे मैंने जान लिया, जो तुम कहो तुम कर सको।
तेरा कुछ तो न लागे पिया, मेरा मन चरणन् में धर सको।।९।।

स्वभाव बदल दे तू मेरा, जग तेरा न भाये मुझे।
तेरे चरण में बैठी रहूँ, तेरे जग की याद न आये मुझे।।१०।।

ऐसी भक्ति दे मुझे, तुम बिन कुछ न देख सकूँ।
उलट कर मोरी नयन पुतरिया, अब तुमको ही देख सकूँ।।११।।

तेरे बिना ओ राम मेरे, किसके चरण में जाऊँ मैं।
तू ही राह दिखा दो पिया, तेरी ही शरणां आऊँ मैं।।१२।।

अब जो तू कहे मैं वही करूँ, जो दे वही मैं ध्याऊँ पिया।
ऐसा मन्त्र तू दे दे पिया, अब तेरी हो जाऊँ पिया।।१३।।

जो है जग में तेरा है, मैं तुझको कुछ भी दे न सकूँ।
इक 'मैं' को ही अपना कहूँ, वह 'मैं' भी तुझको दे न सकूँ।।१४।।

चरणन् में निज को कई बार, चढ़ाने द्वार पे आई हूँ।
मुझे ऐसा लगे ओ राम मेरे, अरे कुछ भी चढ़ा न पाई हूँ।।१५।।

जब द्वार से उठ जाऊँ, तो 'मैं' भी संग में उठ जाये।
किस विध 'मैं' को छोड़ जाऊँ, तू दे दे राम कोई उपाय।।१६।।

'मैं' मेरी पिया मिटती नहीं, मेरी घड़ियाँ मिटती जाती हैं।
बिन दर्शन के ओ राम मेरे, अखियाँ भी मिटती जाती हैं।।१७।।

एकान्त देश सेवन को, इक मन्दिर तुम बनवा ही दो।
कहीं दूर वह मन्दिर हो, वहाँ इस तन को बिठा ही दो।।१८।।

फिर तेरी आरती लूँगी मैं, तुझे पुकारती रहूँ हर पल मैं।
हर पल हर जा राम मेरे, तेरा पंथ निहारती रहूँगी मैं।।१९।।

जा ऐसा कर दे इस घर को, अब कोई यहाँ पर न आये।
मैं मर जाऊँ या रोती रहूँ, कोई भी मुझे न बुलाये।।२०।।

बस तू हो राम और यह तन हो, मन हो चरण में पड़ा हुआ।
कुछ भी न दीखे राम मुझे, तू सामने हो खड़ा हुआ।।२१।।

धर, जग, तन, मन सब तेरा है, मुझको अनुभव हो जाये।
जान लूँ मैं भी तेरी हूँ, यह भाव भी सम्भव हो जाये।।२२।।

ज्ञान मुझे न दो तू पिया, गर ज्ञान मिले तू दूर हो।
अज्ञानी मूढ़ा रहने दो, मेरा राम न मुझ से दूर हो।।२३।।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञाननमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।।११।।

श्रीमद्भगवद्गीता-१३/११

(द्वितीय अध्ययन)

शब्दार्थ :

१. अध्यात्म ज्ञान में नित्य स्थिति,
२. तत्व रूप ज्ञान के नित्य दर्शन,
३. यह सब ज्ञान है।
४. जो इससे विपरीत है, वह अज्ञान है, ऐसा कहा गया है।

वह तत्व तुझे बतलाऊँगा, जिसका ज्ञान आवश्यक है।

आत्म अनात्म विवेक ज्ञान, इसमें नित ही रहा करो।
श्रवण मनन निदिध्यासन, प्रेम भाव से करा करो।।१।।

सब जा राम हैं तत्व से, गर मान लिया तूने।
नित निष्ठा इस में हुई, और उसको जान लिया तूने।।२।।

यह ही पूर्ण ज्ञान है, इसके परे मन कोई नहीं।
सब कुछ सब जा राम है, उसके परे कोई नहीं।।३।।

मिथ्या चाहना तेरी जग की, राम की चाहना करती जा।
पूर्ण जो है वह ही है, तू उसकी चाहना करती जा।।४।।

एक ही सत्य है पूर्ण जग में, वह तो मेरा राम ही है।
उससे अन्य भ्रमकारक है, जो भी है अज्ञान है।।५।।

दृढ़ निश्चय कर राम चरण में, हर पल उसे पुकारा कर।
नयन मूँद ले जग से तू, बस राम का पंथ निहारा कर।।६।।

राम ज्ञान न दे मुझको, उसे जान के मेरा क्या होगा।
अनुभव दे मुझे चरण में ले, एहसान यही तेरा होगा।।७।।

ज्ञान स्वरूप होने की, मेरी तृष्णा नहीं प्रभु।
कोई मन्त्र नहीं कोई यंत्र नहीं, कोई तृष्णा नहीं मेरी प्रभु।।८।।

हर पल तुझको पुकार रही, तुम ही राह दिखा दो न।
ज्ञान न दो मुझे भक्ति दो, निज चरणन् में बिठा लो न।।९।।

तुम कहते हो ओ राम मेरे, ज्ञान है सेतु राम का।
मैंने पहले भी सुना था राम तुम्हीं से, ज्ञान सेतु है राम का।।१०।।

पर ज्ञान भी राम तुम ही हो, तुम ही सामने आ जावो।
गर तुम आये ज्ञान आ जाये, मुझे निज में ही समा जावो।।११।।

ज्ञानेश्वर मेरे परमेश्वर, दोनों तुम ही हो।
मुझे परमेश्वर को मिलना है, अब मिलना क्योंकर हो।।१२।।

❖ ❖ ❖

भगवान योगक्षेम किसका करते हैं

डॉ. जे के महता

अर्पणा पुष्पांजलि अंक मार्च १९८७

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने साधक को आश्वासन देते हुए कहा :-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। ९/२२

"जो अनन्य भाव से मेरे में स्थित हुए भक्तजन मुझ परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से मुझे भजते हैं, उन नित्य एकीभाव से मेरे में स्थिति वाले पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं करता हूँ।"

अर्थात् उन का जो योग भगवान से है अथवा उनकी जो लग्न भगवान से मिलने की है, उसका क्षेम करता हूँ यानि उनकी साधना की रक्षा करता हूँ।

परन्तु साधक जानना चाहता है कि वह भक्त कैसा है जिसका योगक्षेम करने का

भगवान ने वायदा किया है? क्योंकि वह भी इसका पात्र बनना चाहता है। भगवान ने ऐसे साधक के तीन लक्ष्ण बताये हैं :

१. अनन्य चिन्तन - अनन्य भाव से चिन्तन
२. पर्युपास्ते - पूजा भाव से सत्य के समीप रहना
३. नित्यभियुक्त - नित्य मुझ में स्थित रहना

इनका विस्तार करते हुए पूज्य माँ ने कहा :

ऐसा भक्त निरन्तर अपने आपको प्रभु की चाकरी में लगाये रखता है। इसके अतिरिक्त न कोई उसकी चाहना है, न उसे और कुछ पाना है, और न ही उसका और कोई प्रयोजन है। वह अध्यात्म को अपने जीवन में उतारने के पूर्ण प्रयत्न करता है और उन गुणों का अपने में उपार्जन करता है जो उसको उसके प्रियतम से मिला दे। वह अपने तन, मन और बुद्धि को अपने प्रभु की चाकरी में लगा देता है। वह भी नित्याभियुक्त है। उसकी निरन्तर एक ही प्रार्थना होती है..

"हे मेरे मालिक, मैं अपनी पूर्ण योग्यता और सामर्थ्य सहित यह अपना तन, मन और बुद्धि आपके चरणों में अर्पित करता हूँ। मेरा यह स्थूल तन एवं सूक्ष्म मन सब आप की ही इच्छा अनुसार आपके विधानानुकूल जग में विचरेगा।

वहाँ मेरी रुचि का प्रश्न ही नहीं उठता। वह भगवान की नित्य उपासना करता है और उनको अपने जीवन राही धरती पर उतारता है। उसके हृदय में से भगवान के गुणों के अतिरिक्त और कुछ नहीं बहता। उसके भाव सत्य स्वरूप के इर्द-गिर्द ही मंडराते रहते हैं। कोई भी भाव जो उसे भगवान से दूर ले जाये, उसे वह सह ही नहीं सकता। भगवान का हृदय में वास ही उसकी निरन्तर पुकार है। अपने मालिक के आवाहन की तीव्र पुकार उसके सब भय, चिन्ता, द्वन्द दूर कर देती है। संसार के प्रति ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न करने वाला उसका वृति प्रवाह पूर्ण शांत हो जाता है।

मन के द्वन्द्व बाह्य सम्पर्क से प्राप्त प्रतिकार-झंकार पर आधारित है। जब प्रभु से प्रेम होता है तो जग से संघर्ष समाप्त हो जाता है। ऐसा साधक अपने प्रियतम का चाकर बनकर संसार में उसकी चाकरी करता है। वह शास्त्रों के हाथ में यन्त्रवत होकर विचरता है। "शास्त्र मेरे परम पूज्य, अति सुन्दर प्रियतम राही प्रवाहित हुए हैं" इसी भाव में खोया हुआ साधक निरन्तर शास्त्रों को अपने जीवन में उतारने का अभ्यास करता रहता है। उसके लिए यही भगवान की आज्ञा का पालन है, यही पूजा है और यही भगवान की इच्छा में रहना है।

भगवान ने कहा "ऐसे साधकों के योग का एवं उनकी भक्ति का संरक्षण मैं स्वयं करता हूँ।" साधक अपना विषय वस्तु रूपा पूर्ण संसार भगवान को अर्पित कर देता है और वह तन में नहीं, आत्मा में रमण करता है। तन जो भी करता है उसकी प्रेरणा तनोभाव से नहीं, आत्मा से आती है।

एक साधारण जीव के लिए अपना सर्वस्व भगवान के चरणों में अर्पित करना ही सबसे बड़ा तप है। ऐसे साधक का आकर्षण आत्मा में है, स्थूल वस्तु में नहीं। और जब वह आत्मा में लीन हो जाता है तो अर्पण का भी उसके लिए कोई महत्व नहीं रहता। तब वह पूर्ण उदासीन हुआ आनन्द स्वरूप होकर जग में विचरता है। भगवान ऐसे साधक का योगक्षेम करते हैं।

योग में जब हम अपने भगवान की ओर जाते हैं तो हमारा वास आत्मा में होता है। ऐसे साधक के लिए अपने तन, मन और बुद्धि का कोई अर्थ नहीं रहता। 'मैं' के राज्य के स्थान पर अब भगवान राज्य करने लगते हैं। 'मैं' तो केवल एक अंधेरा है जिसने आत्मा को आवृत कर रखा है.. भगवान के हृदय में आ जाने से वह स्वतः ही दूर हो जाता है।

इस 'मैं' के रहते रहते यह तन भगवान के किसी काम का नहीं.. राख की ढेरी है। 'मैं' ही बन्धन का कारण है.. भगवान की तरफ पग रखते ही यह महत्वहीन होने लगती है, और इसका अभाव होते ही भगवान का इस तन से सीधा नाता हो जाता है और तन केवल उनके आदेश का पालन करता है।

भगवान से प्रेम हो जाये तो चित की सब ग्रन्थियाँ अपने आप खुलने लगती हैं। तन, मन और बुद्धि को अर्पित किये बिना यह गहरी ग्रन्थियाँ नहीं खुलतीं। इस 'मैं' का अभाव होने पर तन और उसके पूर्ण संसार पर भगवान का राज्य हो जाता है।

❖ ❖ ❖

सूर्य प्राण और चान्द रयि,
मिली विस्तार रे करते हैं..

गतांक से आगे-

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम्।
पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायां बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः।।

मुण्डकोपनिषद - २/१/५

शब्दार्थः

उससे ही अग्निदेव प्रकट हुआ; जिसकी समिधा सूर्य है; उस अग्नि से सोम उत्पन्न हुआ, सोम से मेघ उत्पन्न हुए और मेघों से वर्षा द्वारा पृथ्वी में नाना प्रकार की औषधियाँ उत्पन्न हुईं; औषधियों के भक्षण से उत्पन्न हुए वीर्य को पुरुष स्त्री में सिंचन करता है जिससे सन्तान उत्पन्न होती है; इस प्रकार उस परम पुरुष से ही नाना प्रकार के चराचर प्राणी नियमपूर्वक उत्पन्न हुए हैं।

तत्व विस्तारः

सगुण ब्रह्म सों अग्न यह, जन्म ले सूर्य ईंधन भये।
प्राण सूर्य सों उदय होयें, सूर्य परम प्रतीक है रे।।१।।

चान्द को रयि भी कहते हैं, वर्षा पात वही रे करे।
अन्न बीज पुष्टित करे, भूमि पर फिर अन्न उपजे।।२।।

अन्न सों वीर्य रे होता है, फिर जीव जन्म रे होता है।
सम्पूर्ण का जान ले, कारण परम ही होता है।।३।।

अनेक विधि सृष्टि की, उत्पत्ति की बात कहें।
निश्चित क्रम रे क्या है, ज्यों चाहें लीला करें।।४।।

परम पुरुष पुरुषोत्तम सों, अग्न तत्व प्रथम जन्मा।
सूर्य ईंधन वा का भया, संकल्प अग्न सों रे जन्मा।।५।।

प्रथम संसरणा अग्न कहें, सूर्य को वह ज्योति दे।
सूर्य रश्मि शक्ति भये, मेघ रूप वह आप धरे।।६।।

चन्द्रमा की रश्मि ही, सर्व उत्पत्ति में रस दे।
रग रग में संचारित हो, परम रस वह ही तो दे।।७।।

ओस रूप में बरसाये, नन्हीं बुन्दिया बन आये।
प्रेम रस सों तुम कह लो, वीर्य जहान में भर जाये।।८।।

सूर्य का वीर्य रे यह ही है, पृथ्वी पे औषध जन्मे।
वनस्पत भक्षण करी करी, हर तन वीर्य ईंधन जन्मे।।९।।

नारी गर्भ में जाये करी, वर्द्धित हो तन जन्म दे।
बीज बने और आप वह, नित्य ही वा सिंचन करे।।१०।।

इस विध जानो परम सों, पूर्ण जग उत्पन्न भये।
विश्व रूप यह भूत भाव, परम सों ही उत्पन्न भये।।११।।

स्थूल रूप यह बाह्य लोक, खिलवाड़ बस उसका है।
खेल खिलाड़ी वह ही है, जग यह खेल रे उसका है।।१२।।

सूर्य बिम्ब रे उसका है, सूर्य पसारा जग सारा।
परम की छाया मात्र है, दृश्य अदृश्य यह जग सारा।।१३।।

सूर्य प्राण और चान्द रयि, मिली विस्तार रे करते हैं।
पर वह राम ही दोनों का, रूप आप ही धरते हैं।।१४।।

सूर्य को चेतन कहूँ, रयि को जड़ वर्ग कह लूँ।
अरे सब कही कही क्या कहूँ, कह के कुछ भी न कह लूँ।।१५।।

सत्त्व तत्व तो इतना है, विस्तृत वह हो आये हैं।
नाम रूप रे सब धरी, वह ही तो रे आये हैं।।१६।।

किस विध क्योंकर वह प्रकटे, कहने को रे कहते हैं।
राम राम सब राम ही है, बार बार वह कहते हैं।।१७।।

अंग अंग में वह ही है, ज्यों स्वप्न में द्रष्टा छाया है।
पर सब हो कर वह कुछ भी नहीं, जान लो सत्त्व वह पाया है।।१८।।

स्वप्न देश और काल कहाँ, स्वप्न स्थिति अरे कहाँ पे हो।
स्वप्न पिता अरे तुम चाहो, स्वप्न द्रष्टा को कह लो।।१९।।

उसी विधि पूर्ण जग का, विस्तार वही रे करते हैं।
आधार बनी पूर्ण जग में, अपने आप में रहते हैं।।२०।।

विविध विधि वह देख कहें, जग रे इस विध प्रकटे है।
पूछे मन यह बार बार, यह राम कहो कहाँ प्रकटे है।।२१।।

राम हृदय में जग यह बसे, विश्व रूप रे वह ही है।
स्वप्न विश्व का रे ज्यों, एक रूप रे वह ही है।।२२।।

चर अचर बाह्य दृश्य, नियम से उत्पन्न कहें हुआ।
परम भाव ने तुम कह लो, नियम वहाँ पे है किया।।२३।।

कर्मन् का ही खेल है, जो रूप है धर रहा।
समष्टि कर्म और व्यष्टि कर्म, नाना रूप है धर रहा।।२४।।

देख कहें जब इस जग में, अधर्म बढ़े वह जन्मे है।
आह सुनी कर सन्तन् की, प्रवाह सुनी कर जन्मे है।।२५।।

सच ही है अरे देख लो, समष्टि आह रंग लाये।
समष्टि चाह रे जान करी, अवतार बन के आ जाये।।२६।।

अनेक बार दिव्य जन्म, गर्भ बिन ही पाये है।
अनेक बार वह जननी के, गर्भ सों ही आये हैं।।२७।।

अपनी रेखा रे नहीं नहीं, अपना कर्म रे नहीं नहीं।
जग कारण है जन्म हुआ, अपना जन्म है नहीं नहीं।।२८।।

दिव्य कर्म हों जन्म से, दुष्टन् का संहार करे।
साधु जन का जान ले, अवतार उद्धार करे।।२९।।

समष्टि जन्म का कारण है, समष्टि भाव ने रूप धरा।
नक्षत्र जो देश का है, उसने कहो रे रूप धरा।।३०।

विपरीत राशि जब बन जाये, प्रलय ही लो आते हैं।
सच जानो समष्टि ही, संस्कार बन जाते हैं।।३१।।

कभी उत्थान को वह आयें, जग उद्धार रे कर जायें।
कभी प्रलय रे बन करी, जग का नाश वह कर जायें।।३२।।

पर कौन मरा और कौन जीया, सब आप में आप वह करे।
कर्मन् का यह खेल है, कर्म रूप बस वह धरे।।३३।।

इस नाते से समझ ले, हर रूप रे वह ही है।
व्यष्टि रूप सों भी रे सुनो, जीव रूप भी वह ही है।।३४।।

नाम रूप सब उसके हैं, आप आप में आप भये।
कर्म क्रीड़ा जो हो रही, नटवर नागर आप करें।।३५।।

नटखट देख वह देखे है, सब करी करी मौन रहे।
जीव भाव जो वृत्ति धरे, रूप धरे कहे कौन करे।।३६।।

वह जाने और मौन रहे, जो न जाने सो ही रे कहे।
इक वृत्ति वा की रे कहे, जो करे सब वही करे।।३७।।

दूजी वृत्ति अहम् भरी, देख कहे रे हम करें।
सत्त्व तत्व बिन जाने, मिथ्या दम्भ रे वह भरे।।३८।।

पर जान ले राम कहें, दम्भी रूप भी राम हैं।
वा में मन के भाव जो, अपना आप वह राम हैं।।३९।।

हर मन वह अमन है जो, अरूप ने देख रे रूप धरे।
अमूर्त सत में देख ज़रा, मूर्त आप में आप भये।।४०।।

स्वप्न का कारण जीव भाव, और तन चाहे यह तुम कह लो।
स्वप्नाकार वृत्ति तेरी, सूक्ष्म चाहे तुम कह लो।।४१।।

स्वप्न जो उभरे स्थूल जग, उसको चाहे तुम कह लो।
कारण तन क्षणभंगुर है, समझ सको तो तुम कह लो।।४२।।

स्वप्न का कारण तन यह है, संस्कार सों भरा हुआ।
जग का कारण कारण तन, कर्माशय रे वही हुआ।।४३।।

तन मिथ्या यह मिट जाये, कारण तन भी नहीं रहे।
सूक्ष्म स्थूल रे कहाँ टिके, जब कारण ही नहीं रहे।।४४।।

कारण परे है महा मौन, वही स्वरूप रे मेरा है।
समझ सके तो समझ ले, अखण्ड रूप रे मेरा है।।४५।।

नानात्व में तू पड़ा, अपने आप को भूल गया।
बार बार वह यही कहें, अब अपने आप को देख ज़रा।।४६।।

बस अपरा ज्ञान यही, पूर्ण जग यह जान ले।
कहना तो चाहे कह ले, राम में सब यह जान ले।।४७।।

ज्यों सपने की स्थिति नहीं, उस विध जग यह है नहीं।
अज्ञान का यह खेल है, ज्ञान में सब यह है नहीं।।४८।।

मिथ्या रमण अब छोड़ दे, सत्त्व तत्व रे जान ले।
मन बुद्धि सों उठ करी, साधक रे अब जान ले।।४९।।

१०-९-६१

अनुपम साधना स्थली - अर्पणा

प्रस्तुति - श्रीमती शान्ता

अर्पणा पुष्पांजलि अंक अगस्त १९९४

पिछले कई वर्षों से मुझे अर्पणा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यहाँ का प्राकृतिक मनोरम वातावरण, आश्रम वासियों का स्नेहशील आत्मीय व्यवहार, भव्य मन्दिर, पूजा व उपासना पद्धति, साधना प्रणाली तथा अध्यात्म के सरल दृष्टिकोण को देख कर मन ही मन मैं एक विचित्र प्रकार की अनुभूति प्राप्त कर रही हूँ।

अर्पणा की सर्वोच्च विशेषता यह है कि यहाँ के साधक 'मैं' मिटाव के प्रयास में रत हैं। वे आश्रम की विभिन्न गतिविधियों के विस्तार में अहर्निश निमग्न रहते हैं। उनका कार्यक्षेत्र मधुबन तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश-विदेश में जहाँ कहीं भी उन्हें जाना

पड़ता है, वे जाते हैं। लेकिन वे क्या करते हैं, कितने घंटे काम करते हैं, कब सोते हैं, कब जागते हैं, इसकी कभी कोई चर्चा नहीं करते!

उनके निकट रहते हुए भी मैंने कभी उन के मुख से इतना कहते हुए भी नहीं सुना कि वे बहुत व्यस्त हैं.. उन्हें पल भर की भी फ़ुरसत नहीं.. बल्कि उनके चेहरों पर मधुर मुसकान व आत्म सन्तुष्टि की विशेष झलक दिखाई देती है। उनके समस्त कार्यक्रम मौन में ही सम्पन्न होते नज़र आते हैं। कर्तापन के अभाव का स्पष्ट दर्शन जो यहाँ देखने को मिलता है, वह 'अर्पणा' नाम की यथार्थता दर्शाता है।

अर्पणा के साधकों की मूल प्रेरणा, वेदान्त की मूर्त रूपा, भक्ति की सजीव प्रतिमा हैं- परम पूज्य माँ। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवीयता, दैवी गुण, नाम, भक्ति तथा अध्यात्म का प्रकाश फैलाये पग पग पर हम सब का पथ प्रशस्त कर रहा है।

पूज्य माँ की वाणी राही एवं उनसे प्राप्त सत्संगों में साधना के विषय में जो कुछ भी मैं अभी तक समझ पाई हूँ, वह है.. '**आवरण मिटाव ही साधना है।**' हम संसारी लोग जग को मिथ्या मान कर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और अपनी ही 'मैं' व अहंकार के कारण निज को दोष मुक्त करते हुए जग को दोषी ठहराते हैं।

पूज्य माँ के अनुसार हमारी भूल यहीं से शुरु होती है और यही हमारी अज्ञानता है। ब्रह्म रूपा जग मिथ्या नहीं, मिथ्या है हमारा मनोजग, जो अपनी ही दृष्टि से दूसरों के प्रति भावों का ताना-बाना बुनता रहता है।

सत्य तो यह है कि जड़-चेतन व प्रकृति में जो कुछ भी दृश्यमान हो रहा है, वह उस परम ब्रह्म की दिव्य कल्पना एवं उसका ही संकल्प है। विश्व उस परम पिता परमात्मा की एक सुन्दर कृति है। प्रकृति के किसी भी कर्म के प्रति हमारी प्रतिक्रिया नहीं होती, चाहे वह सुखद हो या विनाशकारी। जिस प्रकार बाढ़, भूकम्प आदि के आने पर हम उसे भगवान का हुक्म मान कर स्वीकार कर लेते हैं, उसी प्रकार हमें विराट जग को वैश्वनर रूप मान कर उस की यथाशक्ति सेवा करते हुए राग-द्वेष तथा दोष-दृष्टि से मुक्त होना है। जग तो साधक के लिए उसकी साधना का अभ्यास क्षेत्र है।

तुलसीदास जी कहते हैं, '**सिया राम मय सब जग जानी, करहूँ प्रणाम जोरी जुग पाणि।**' पूज्य माँ का जीवन इस भाव की मानो सविस्तार व्याख्या है। वह विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी कहती हैं, "जग ने दुःख मुझे नहीं दिया, क्यों दोष लगाऊँ मैं?" उनकी दृष्टि तो इस सत्य पर टिकी रहती है कि, "हर रूप में राम ही आये हैं, मुझे सिखाने आये हैं।" उनसे ही यह पता चला है कि अज्ञानता का आवरण 'मैं', 'मम' व अहंकार से ऊपर उठ कर ही मिटाया जा सकता है।

आत्म दर्शन

दूसरों के प्रति दोष-दृष्टि का नितान्त अभाव ही अर्पणा की साधना का मूल मंत्र है और इसके लिए पूज्य माँ चित्त-शुद्धि, चित्त की पावनता और राममय भाव की प्रधानता पर बल देती हैं। उनके अनुसार परिस्थिति भगवान की देन है और वह विधान द्वारा

निर्मित है। परिस्थिति आती है और पल भर में चित्रपट के दृश्य की तरह परदे से निकल जाती है। सुख दुःख परिस्थिति में नहीं होता। यह तो केवल मन का विषय है और हमारी स्वयं की सोच पर आधारित होता है। हम दूसरों को दोषी मानते हुए अपने आगामी कर्म बीजों का निर्माण करते हैं। साधक हर परिस्थिति में से अपने लिये सन्देश ग्रहण करता है। वह मानता है कि जग उस सूत्रधारी की रचना है और हमें जीने का ढंग शास्त्र प्रतिपादित सत्य से सीखना है।

वह समझता है कि जग त्रिगुणात्मिक शक्तियों का ही खिलवाड़ है और '**गुणाः गुणेषु वर्तन्ते**' की सत्यता को दृष्टिगत करते हुए ही यदि हम इंसानों के प्रति दृष्टिकोण रखेंगे तो हम दूसरों को दोष-मुक्त करते हुए आत्म-दर्शन की प्रवृत्ति अपना लेंगे।

इस से शनैः शनैः हमारा चित्त-शुद्धि का अभ्यास बढ़ता जायेगा। यदि स्वप्न में भी मन में किसी के प्रति दोष भाव न उठ पाये और हर अवस्था में हम आन्तर्मुखी होकर स्वयं को निहारते जाएँ तो हम जान पाएँगे कि मन में उठने वाले भावों का जन्म अपने ही मन में होता है।

इससे हमें अपनी आन्तरिक मल का पता चलता है। ज्ञान को हमने जीवन में कितना धारण किया है, मन यह भी दर्शन करने लगता है। हमें अपने में बैठ कर, शास्त्रीय बुद्धि द्वारा अपने को निरखना है। इसी सत्य को पूज्य माँ ने निम्नलिखित पंक्तियों में समझाया है-

"मनोमन साधक बैठ करी, मनोमल देखे जाए है।
मनोमल उन्मूलन ही, अब वह साधक चाहे है।।

जब आन्तर में वह देखेगा, आन्तर्मुखी हो जायेगा।
निहित भावना आपुनो ही, वह देखे जायेगा।।"

इस प्रकार जो आन्तर में बैठकर अपने को देखता है, वही द्रष्टा होता है।

निष्काम भाव

जीवन एक कर्म प्रणाली है और कर्मों द्वारा ही इनसान सजग और सचेत होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है। वही कर्म उन्नत व श्रेष्ठ हैं जो निष्काम भाव से किये जाएँ।

गीता का श्लोक- '**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**' अर्पणा की कर्मप्रणाली का आधार है। कर्म करने का तो हमें अधिकार है, पर फलाकांक्षा से रहित कर्म ही भगवान की सच्ची पूजा है। पूज्य माँ का जीवन इस तथ्य को किस प्रकार चरितार्थ किये हुए है, हम इसका दर्शन अहर्निश उनके निकट रह कर रहे हैं।

वह न ही गुरु बन, उच्च आसन पर आसीन होकर अपनी पूजा करवाती हैं और न ही नाम, मान, यश व पद-प्रतिष्ठा की इच्छुक हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन निष्काम कर्मों की एक सुन्दर लड़ी है। अपने पिता जी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, पूज्य माँ ने एक जगह कहा है :

"कर्तव्य ही बस जीवन है, जीवन कर्म प्रवाह ही है।
राम को भी बस पाने की, यह जीवन ही इक राह है।।

संग त्याग अभ्यास करी, कर्म से संग नहीं करो।
फल की चाहना छोड़ करी, परम मिलन के यत्न करो।।

फल चाहना छोड़ करी, जो कर्म भी करते जाओगे।
अभ्यास सो संग छूटेगा, योग स्थित हो जाओगे।।"

अर्पणा में एक स्वर्गीय सृष्टि का निर्माण करने वाली पूज्य माँ के जीवन में मैं ज्यों ज्यों अति विलक्षण दृष्टिकोण को अनुभव करती हूँ, मेरा मस्तक असीम श्रद्धा से उनके चरणों में नत हो जाता है और ईश्वर से बस यही प्रार्थना करती हूँ कि हम सब पर उनका साया दीर्घकाल तक बना रहे..

उन्हीं के शब्दों में मैं यही याचना करती हूँ -

'इतनी विनती स्वीकार करो, बाक़ी पल यूँ ही बीतें।।'
तेरे चरण में ध्यान रहे अब से, बाक़ी घड़ियाँ यूँ ही बीतें।।'❖

अर्पणा मन्दिर

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
अगस्त २०२१

अर्पणा के आयोजन

अर्पणा दिवस - परम पूज्य माँ का उत्सव

परम पूज्य माँ के सम्पर्क में आने वाले कितने ही जीवन भ्रम के दलदल से उठ कर, अपने आन्तर के विक्षेपों से निकल कर आनन्द की ओर बढ़े.. जहाँ है शुद्ध एवं हर्षित मन - केवल सत चित आनन्द!

२६ अगस्त को हम उनके जन्म का दिन 'अर्पणा दिवस' के रूप में मनाते हैं। पिछले कई वर्षों से रिकॉर्ड किये गये बहुमूल्य सत्संग वीडियो दिखाये जाते हैं जिनसे हम पूज्य माँ को अपने दिलों के और भी क़रीब महसूस करते हैं एवं जिसके परिणाम रूप परस्पर प्रेम और आपसी समझ के नये द्वार खुल रहे हैं।

कार्यक्रम कुछ इस प्रकार रहे

१. साधकों द्वारा परम पूज्य माँ से पूछे गये प्रश्न और उनके गहन एवं ज्ञानवर्धक उत्तर
२. गीता द्वितीय अध्ययन - सत्य की अनुभूति की ओर परम पूज्य माँ की व्यक्तिगत यात्रा में से १३/७-११ श्लोकों का सुश्री विष्णु महता और श्रीमती निरिति वैद का परस्पर वार्तालाप एवं अध्ययन।
३. 'उर्वशी ललित कला अकादमी' द्वारा पूज्य माँ की हृदयस्पर्शी प्रार्थनाओं से उद्धृत भजनों का गायन
४. 'वैराग्य और संन्यास' - परम पूज्य माँ का दिव्य प्रवाह।

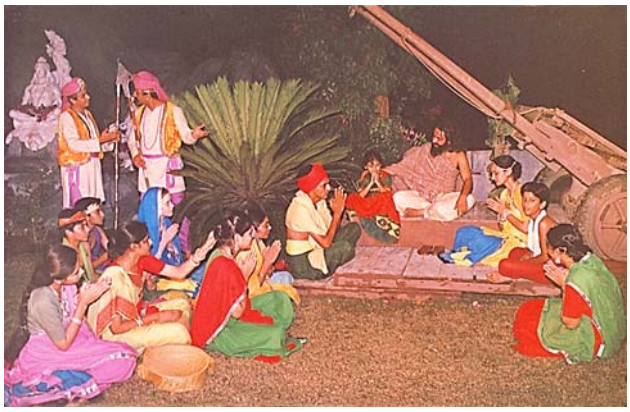

५. **'रैकब ऋषि'** - परम पूज्य माँ द्वारा रैकब ऋषि की उच्च मनोस्थिति बताई गई.. रैकब ऋषि की नाटकीय प्रस्तुति के लिए परम पूज्य माँ ने बताया कि शाश्वत मूल्यों की सर्वोच्चता की तुलना में सांसारिक प्रसिद्धि, शक्ति एवं धन कितने कमज़ोर और व्यर्थ हैं।

हरियाणा

दीन दयाल उपाध्याय केन्द्र, नीलोखेड़ी में सहायक उपकरण शिविर आयोजित

अर्पणा ने विकलांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) को सक्षम बनाने के लिए दीन दयाल उपाध्याय संस्थान के साथ एक सार्थक सम्बंध स्थापित किया है।

अर्पणा द्वारा सहायक उपकरणों के लिए श्रवण दोष और चलने में असमर्थ विकलांग व्यक्तियों की पहचान की गई।

५ जुलाई २०२१ को नीलोखेड़ी में दीन दयाल संस्थान ने विकलांग व्यक्तियों के सहायक उपकरणों के लिए एक शिविर का आयोजन किया। अर्पणा ने ८ गाँवों में से १३ दिव्यांगजनों को शिविर में पहुँचाया, जिन्हें श्रवण यंत्र, व्हीलचेयर, स्मार्ट स्टिक, बैसाखी और तिपहिया वाहन दिये गये।

श्री सोम, गाँव सदरपुर के निवासी ६२ वर्ष के हैं और 'हिम्मत डिफरेंटली एबल्ड पर्सन्स ऑर्गनाइज़ेशन' के सदस्य हैं। १० वर्ष पूर्व अपने छोटे बेटे की मृत्यु के सदमे के कारण उनकी आँखों की रोशनी चली गई, जिससे वह दृष्टिहीन हो गये। (उनका बेटा बीमार रहता था) उनके अब दो बेटे और एक बेटी हैं और सभी की शादी हो चुकी है। सभी बच्चे अपने अपने परिवारों के साथ अलग-अलग रहते हैं। श्री सोम के अंधेपन के कारण उनकी पत्नी दिहाड़ी मजदूरी करके अपने दोनों का भरण पोषण करती है। अर्पणा द्वारा उन्हें एक स्मार्ट स्टिक दी गई है ताकि वह आसानी से चलने में समर्थ हो सकें।

अर्पणा के स्पेशलिटी कैंप और विकास कार्यों में सहायता के लिए बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट एवं श्रीमती सुषमा अग्रवाल, नई दिल्ली, के प्रति दोनों का हार्दिक आभार।

अर्पणा अस्पताल

६५ वर्षीय प्रकाशी अपने पति के साथ गाँव शखेड़ा में रहती है, जो अब काम करने में सक्षम नहीं है। उनकी पेंशन ही उनकी आमदनी का एकमात्र ज़रिया है।

एक वर्ष पूर्व, उसकी बाईं आँख का मोतियाबिंद हटाने के लिए एक मेडिकल शिविर में उसकी असफल सर्जरी हुई थी, जिससे उसकी बाईं आँख की दृष्टि धुँधली हो गई।

उसके रिश्तेदार उसे अर्पणा अस्पताल ले आए, उसे मोतियाबिंद के लिये एक और सर्जरी की ज़रूरत थी। यहाँ डॉक्टर ने उसकी बाईं आँख में मोतियाबिंद का निदान किया। उसकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए उसकी निःशुल्क सर्जरी की गई और उसे मुफ्त दवाएं भी दी गईं।

अपनी दृष्टि की सफल सर्जरी के लिए निःशुल्क सेवाएं प्राप्त करके वह बहुत ख़ुश और आभारी है।

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन (यूएसए) एवं 'फ्रेंड्स ऑफ कल्पना एंड जयदेव देसाई' (यूएसए), के समर्थन के लिए हमारी गहरी कृतज्ञता!

दिल्ली कार्यक्रम

मोलरबन्द

हम भी किसी से कम नहीं..

शिवानी अव्वल स्थान पर रही!

१२वीं कक्षा सीबीएसई बोर्ड, २०२१ के परिणाम

कोविड महामारी के कारण, सीबीएसई बोर्ड परीक्षाएं इस वर्ष आयोजित नहीं की जा सकीं। कक्षा १२वीं का परिणाम (स्कूल परीक्षा एवं प्री-बोर्ड में प्राप्तांकों के आधार पर) ३० जुलाई २०२१ को घोषित किया गया। २४ छात्रों में से २० छात्र ७०% से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण हुए। मानविकी (Humanities) में शिवानी ९३% के साथ पहले स्थान पर रही। टोनिका ८८.२% के साथ दूसरे स्थान पर और सिमरन ८७.४% के साथ तीसरे स्थान पर रहीं। इनमें से अधिकतर छात्र कंप्यूटर पाठ्यक्रम, होटल प्रबंधन, पॉलिटेक्निक, विपणन इत्यादि के साथ आगे पढ़ने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में दाख़िला लेना चाहते हैं।

क्या आप स्लम पुनर्वास कॉलोनियों के बच्चों के विकास एवं उन्हें सक्षम बनाने के लिए हमारा सहयोग देंगे, जिससे वह ख़ुशी और सम्मान के साथ जीने के सफल रास्ते खोज सकेंगे?

उनके लिए अपनी शिक्षा जारी रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके लिए हम आपसे सहायता का अनुरोध करते हैं:

दिल्ली विश्वविद्यालय के लिए छात्रवृत्ति (३वर्ष के लिए कुल ख़र्च)	रु. ४५.०००
तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिये छात्रवृत्ति (३ वर्ष के लिए कुल व्यय)	रु. ९०.०००
कंप्यूटर पाठ्यक्रम के लिए छात्रवृत्ति (१ वर्ष के लिए कुल व्यय)	रु. ३०.०००
मार्केटिंग कोर्स के लिए छात्रवृत्ति (१ वर्ष के लिए कुल ख़र्च)	रु. ६०.०००

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में सहायता प्राप्त करने के लिए अवीवा पीएलसी, यूके, एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, टेक्निप इंडिया, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए एवं अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है।

वसंत विहार

स्वतंत्रता दिवस मनाना

अर्पणा के सामुदायिक केन्द्र 'रिजॉयस', वसंत विहार, नई दिल्ली में आयोजित **ज्ञान आरम्भ** कार्यक्रम द्वारा वंचित वर्ग के कक्षा १-९ के बच्चों को शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की जाती है जिससे वे अपने साथी सहपाठियों के साथ प्रतिस्पर्धा में कम न हों।

वैसे तो कक्षाएं ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं, १२ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए २६ छात्र एक साथ आए।

- छात्रों के लिए खेलों एवं पुरस्कारों की व्यवस्था की गई।
- स्वतंत्रता दिवस के विषय में लघु एनिमेटेड फिल्म देख कर बच्चे ख़ुश हुए।
- मिठाइयों और स्नैक्स का सभी ने भरपूर आनन्द लिया।

हिमाचल प्रदेश

विकास की ओर अग्रसर स्वयं सहायता समूह

७५६ स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने जुलाई माह में ८१ गाँवों में १२६ स्वच्छता संबन्धी कार्य किए!

बख्तपुर एसएचजी महिलाओं की ख़ुशी का ठिकाना न रहा.. जब उनके द्वारा पंचायत में याचिका दर्ज करने पर पीने के पानी के साथ-साथ उनके जानवरों के लिए नाँद अप्रैल के महीने में पूरा हो गया।

अर्पणा की स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की एक अन्य याचिका के उपरांत वन विभाग ने अप्रैल २०२१ से जुलाई २०२१ तक २०,४५० पेड़ लगाये। महिलाओं ने पहले ५ वर्षों तक इन पेड़ों के विकास की रक्षा करने का संकल्प लिया।

पुष्पा का तो जीवन ही बदल गया

सोंताली गाँव के स्वयं सहायता समूह की सदस्य पुष्पा ने जुलाई २०२१ में अपनी दूसरी जर्सी गाय ख़रीदने के लिए समूह से ३०,००० रुपये का माइक्रो-क्रेडिट ऋण लिया। अब वह दूध बेच कर १५,००० रुपये प्रति माह तक की कमाई कर रही है।

आर्थिक रूप से अब वह मज़बूत है और अपने बेटे को बीटेक (B.Tech) करवाने में समर्थ है।

हिमाचल प्रदेश के कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए टाइड्स फाउंडेशन, यूएसए, बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) एवं श्रीमती सुषमा अग्रवाल, (नई दिल्ली) के लिए अर्पणा बहुत आभारी है।

Your compassionate support sustains Arpana's Services

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002
Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249
Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**